

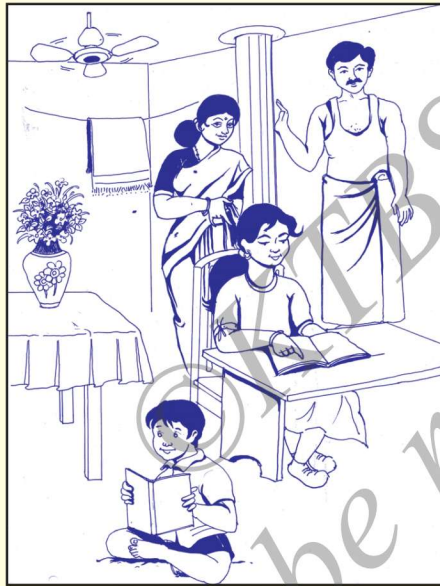


पढ़ना है जी पढ़ना है



- चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

इस कविता के द्वारा बच्चे पढ़ाई और मेहनत का महत्व समझते हैं।



पढ़ना है जी पढ़ना है
हमको ऊपर चढ़ना है।
थोड़े दिन की बात और है
जमकर खूब पढ़ेंगे हम।
इम्तहान में ताल ठोंककर
कुश्ती खूब लड़ेंगे हम।
पास इम्तहान करना है,
पढ़ना है जी पढ़ना है।

फिर गरमी की छुट्टी होगी,
होंगे मौज - मज़े के दिन।
पिक्चर होगी, पिकनिक होगी
होंगे तब मस्ती के दिन।
मेहनत से क्या डरना है,
पढ़ना है जी पढ़ना है।



पापा-मम्मी से लेने हैं,
फिर तो हमको खूब इनाम।
मेहनत करनेवालों की तो,
सदा मदद करते भगवान।

जीवन पथ पर बढ़ना है,
पढ़ना है जी पढ़ना है।



कवि परिचय :

चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक' आधुनिक हिंदी साहित्य के विख्यात कवि हैं। इनका जन्म 1 नवंबर 1925 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ था। इन्होंने कई बालगीतों की रचना की है। इनके प्रमुख बालगीत हैं - 'स्कूल खुल गये', 'खा लो आम', 'एक रहे हैं, एक रहेंगे', 'दीपों की कतार', 'जागृति-गीत', 'किसान गीत', 'दूध मलाई' आदि। 'मयंक' कवि चंद्रपाल यादव का काव्यनाम है।

शब्दार्थ :

जमकर - दृढ़ता से, स्थिर होकर; खूब-बहुत, इम्तहान-परीक्षा, ताल ठोंकना - लड़ने के लिए तैयार होना, मस्ती-हँसी-मज़ाक, मेहनत - परिश्रम, इनाम - पुरस्कार, मदद - सहायता, पथ - मार्ग, रास्ता।

अभ्यास

I अध्यापक के साथ बातचीत :

1. इम्तहान में पास होने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
2. किससे डरना नहीं चाहिए?
3. मेहनत करने वालों की कौन मदद करते हैं?